By :- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

बर्मा के राष्ट्रवाद के उदय के कारण
(The causes of the development of nationalism in Burma)

बर्मा में राष्ट्र जागृति उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण थे:-

1. बर्मा की आर्थिक स्थिति :- ब्रिटिश शासन में बर्मा का आर्थिक शोषण हुआ था, परन्तु अपने हित में अधिक से अधिक दोहन करने के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के लिए आवश्यक हो गया कि वे बर्मा में अधिक से अधिक संसाधनों को खोजें। अतः पेट्रोलियम की खान की खोज हुई। बर्मा में पेट्रोल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। चावल की खेती को प्रोत्साहित किया गया। पेट्रोल एवं चावल का निर्यात बर्मा में प्रभुत मात्रा में होने लगा। इससे बर्मा में ब्रिटिश भारतीय एवं चीनी व्यापारियों के स्वतंत्र व्यापार में और अधिक तीव्रता आ गई। इस स्वतंत्र भारत की वीरता ने बर्मा के सीधे-सादे कृषक वर्ग को प्रभावित किया। ग्राम्य व्यवस्था अव्यवस्थित हो गई और घुमक्कड़ मजदूर वर्ग अस्तित्व में आया। इसका सबसे बड़ा कारण था कि भारतीय साहूकार कर वसूल करनेवाले सरकारी कर्मचारी तथा चीनी व्यापारी कृषकों से अपना भाग जोर-जबरदस्ती कर प्राप्त कर लिया करते थे। इससे कृषक वर्ग के पास अपनी आजीविका के लिए अनाज तक नहीं बच पाता था। अतः कृषक वर्ग असंतुष्ट था। इधर व्यापारियों ने भारत से बर्मी मजदूरों के अनुपात में कम मजदूरी पर कार्य करनेवाले मजदूरों को लाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार माना जा सकता है कि बर्मा का आर्थिक ढाँचा पूर्णतः यूरोपीय विनियोक्ताओं और भारतीय महाजनों के हितों की रक्षा करने वाला बन

चुका था। अतः आर्थिक दृष्टि से शोषित वर्मा में व्यापक परिवर्तन के लिए आक्रोश उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक था

2. ब्रिटिश शिक्षा का प्रसार :- यह ठीक है कि ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली वर्मा को विशेष लाभ प्रदान करनेवाली नहीं थी। केवल कुछ ही वर्मियों को ब्रिटिश प्रशासन से सरकारी नौकरियों पर रखा जाता था। परन्तु इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार ने राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रोत्साहन ही दिया।

3. आवागमन के साधन :- ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का मूल उद्देश्य वर्मा का आर्थिक शोषण करना था। इस शोषण में तीव्रता के लिए यह आवश्यक था कि वर्मा में रेलवे लाइनों एवं सड़कों का निर्माण किया जाय। अतः वर्मा में आवागमन के साधनों के निर्माण ने अब वर्मी वासियों को एक-दूसरे के स्थान पर जाने की जो सुविधा प्रदान कर दी उससे वर्मा वासी वर्मा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से आने-जाने लगे।

4. यूरोपीय घटना चक्र का प्रभाव :- वर्मा में राष्ट्रवादी भावनाओं के विकास में यूरोपीय रंगमंच पर होनेवाली घटनाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से 1904-05 के रूस जापान युद्ध में जापान की विजय एवं प्रथम विश्व युद्ध की घटनाओं ने बर्मावासियों को प्रभावित किया। रूस जापान युद्ध में जापान की विजय ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि यूरोपीय साम्राज्यवाद के राजनीतिक उपाख्यान और सामाजिक दर्शन केवल ढोंग है।